Name :- Kajal Singh.
Roll: No :- 80
Subject :- Poltical (SEC)

प्रश्न संघर्ष प्रबंधन और संघर्ष समाधान पर एक संक्षिप्त नोट लिखे ?

उत्तर

प्रस्तावना (Introduction)

संघर्ष प्रत्येक समाज मे गुप्त रूप से विद्यमान है। कुछ समाजो मे यह छिपा रहता है तथा कई अन्य समाजो मे यह हिंसा और विनाश के रूप मे प्रकट होता है। संघर्ष व्यक्तिगत, पारिवारिक, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर होते है। इस प्रकार, विश्लेषण का आधार और अभिकर्ताओ का स्वरूप प्रत्येक मामले मे भिन्न होता है। इन्ही के कारण भारत और पाकिस्तान के बीच तीन युद्ध हुए और कई बार संकटकालीन स्थितियां बनी। दक्षिण एशिया कई दीर्घकालिक संघर्षों का क्षेत्र है।

Scanned with CamScanner

संघर्ष क्या है ?

संघर्ष मानव सम्बन्धों मे सतत रहने वाली एक प्रक्रिया है। जब व्यक्ति व्यक्ति के बीच सहयोग नही होता अथवा जब वे एक दूसरे के प्रति तटस्थ भी नही होते, तो संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो ही जाती है।

Conflict शब्द लैटिन भाषा के Con + Fligo से मिलकर बना है। संघर्ष का अर्थ है लड़ना, प्रभुत्व के लिए संघर्ष करना, विरोध करना, किसी पर काबू पाना आदि। संघर्ष दो वर्गों मे या समूहों के बीच सशस्त्र प्रतिरोध, लड़ाई या युद्ध संघर्ष है विपरीत सिद्धान्तों, कथनों, तर्कों, विचारों, मतों और पसंद के बीच असामंजस्यपूर्ण व्यवहार भी संघर्ष है।

→ **गिलीन एवं गिलीन** :- के अनुसार संघर्ष "वह सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमे व्यक्ति अथवा समूह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विरोधी के प्रति प्रत्यक्ष हिंसा या हिंसा की धमकी का प्रयोग करते है"।

Scanned with CamScanner

ए. डब्ल्यू ग्रीन, "दूसरो या दूसरो की इच्छा के विरोध, प्रतिकार या बलपूर्वक रोकने के विचारपूर्वक प्रयत्न को संघर्ष कहते है।

जोसेफ ए लिटर के अनुसार, "संघर्ष उन स्थितियों का वर्णन करता है जिसमे व्यक्ति या समूह साधन या अंत से असहमत होते है और दूसरो के लिए अपने विचारों को स्थापित करने की कोशिश करते है।

कार्ल मार्क्स, " के द्वारा संघर्ष सिद्धांत, यह बताता है कि परिमित संसाधनो के लिए समाज की कभी न खत्म होने वाली प्रतियोगिता के कारण। यह हमेशा संघर्ष की स्थिति मे रहेगा। इस सिद्धांत का निहितार्थ यह है कि धन और संसाधनो के कब्जे वाले लोग उन संसाधनों की रक्षा और जमाखोरी करेगें, जबकि उन लोगों के बिना जो कुछ भी वे उन्हे प्राप्त करने के लिए कर सकते है। यह गतिशील साधन अमीर और गरीब के बीच निरंतर संघर्ष है।

Scanned with CamScanner

संघर्ष प्रबंधन (Conflict Management)

संघर्ष समाधान की दिशा और प्रक्रिया में आवश्यक प्रारंभिक कदम के रूप में माना जाता है। दूसरे शब्दों में, संघर्ष समाधान की अवस्था में पहुँचता है अथवा नहीं यह अंशतः उन तरीकों पर निर्भर करता है जिनके अनुसार यह संभव होता है। संघर्ष प्रबंधन प्रक्रिया में कई उपाय अपनाने पड़ते हैं जिनमें प्रतिपक्षियों के बीच संचार और पारस्परिक अन्तर्क्रियाएँ कायम करना, हिंसा को समाप्त / कम करने के लिए व्यवस्था करना और उनकी समस्या के राजनीतिक हल के लिए दलों की वचनबद्धता प्राप्त करना शामिल है।

शान्ति प्रक्रिया के लिए अन्तिम उपाय मार्ग प्रशस्त करता है जिसकी सफलता कथित संघर्ष के समाधान का निर्धारण करेगी।

जॉन बर्टन संघर्ष प्रबंधन में तीन महत्वपूर्ण संघटक पाते हैं।

1. भागीदारी
2. संचार
3. पक्ष

प्रथम संघर्ष के प्रति उभय दलो द्वारा भागीदारी की "कोटि और गुणवत्ता" है। इसमे "समझौता कराने की उपलब्ध शक्ति, निर्णय करने वाली सम्बन्ध संस्था अथवा फोरम है। पर प्रभाव, उपलब्ध ज्ञान और वार्तालाप की निपुणता, और सहभागियो के अन्य प्रभावी लक्षण" शामिल है।

दूसरे, "दलो के बीच संचार की कोटि और गुणवत्ता" है जिसमे स्थिति के बारे मे उनका बोध और समझदारी, सूचना प्राप्त करने और उसे संचरित करने की योग्यता" शामिल है।

तीसरा, "यदि कोई तीसरा दल अन्तग्रस्त है, वहा निर्णय लेने की शक्ति की कोटि, तटस्थता की कोटि, विश्लेषण निपुणता का स्तर और तीसरे दल के अन्य लक्षण शामिल है।"

संघर्ष समाधान (Conflict - Resolution)

संघर्षो का कई प्रकार से समाधान किया जा सकता है। कुछ सर्वाधिक महत्वपूर्ण तरीके पंचायत, मध्यस्थता और प्रत्यक्ष वार्तालाप है। यह संघर्ष समाधान के पुराने तरीको मे से एक है। कथित संघर्ष न्यायाधिकरण अथवा अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय को भेज दिया जाता है।

संघर्ष समाधान के उपाय

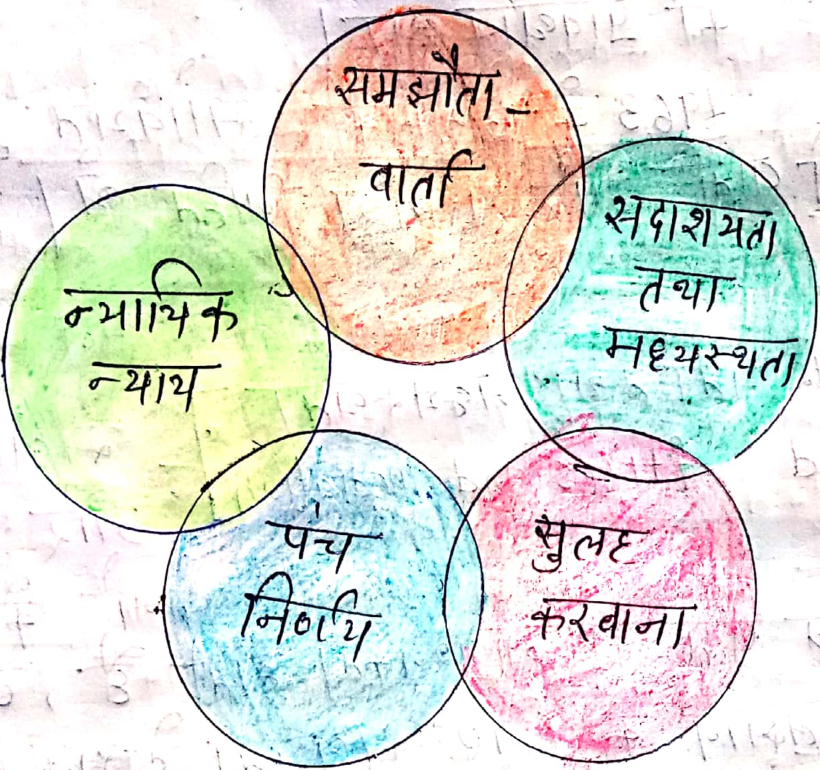

1. समझौता-वार्ता (Negotiation):- संघर्षरत राज्यों के बीच वार्ता या तो द्विपक्षीय होती है या फिर बहुपक्षीय भी हो सकती है। या फिर उन देशों के राजदूतों अथवा विशेष प्रतिनिधियों के बीच हो सकती है। जिन राज्यों के मध्य- हित- टकराव है उनके बीच मे वार्ता अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से भी हो सकती है। वार्ता, सदाशयता, मध्यस्थता तथा समझौता इत्यादि पंच निर्णय और न्यायिक निर्णय की अपेक्षा विवादों को निपटने को

कम औपचारिक उपाय होते है।

उदाहरण :- 1965 के ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौते मे परामर्श का प्रावधान था।

1963 के अमेरिकी-सोवियत दूरसंचार समझौते मे वार्ता और परामर्श निहित थे।

2. [सदाशयता तथा मध्यस्थता / Good offices and Mediation] :-

सदाशयता और मध्यस्थता दोनो के लिए एक तीसरे मित्र पक्ष की आवश्यकता होती है, जोकि विवाद सुलझाने के लिए सहायता दे सकता है। सदाशयता अथवा मध्यस्था का प्रस्ताव या सुझाव करने वाला कोई व्यक्ति हो सकता है, या फिर कोई अन्तर्राष्ट्रीय संगठन। सदाशयता मे कोई तीसरा पक्ष विवाद मे फंसे दोनो पक्षो को एक मंच पर लेकर समझौते का सुझाव देता है। परन्तु वह स्वयं प्रत्यक्ष रूप से समझौता-वार्ता मे शामिल नही होता। मध्यस्थता मे मध्यस्थ की भूमिका अधिक सक्रिय होती है, जिसमे वह स्वयं वार्ता मे शामिल होकर शान्तिपूर्ण समाधान के लिए प्रयास कर सकता है।

Scanned with CamScanner

उदाहरण - (1) 1966 मे ताशकंद मे भारत और पाकिस्तान के बीच समझौता कराने के लिए पूर्व सोवियत संघ ने मध्यस्थता की थी।

(2) श्रीलंका - एल. टी. टी. ई. संघर्ष सुलझाने मे सहायता के लिए नार्वे ने सदाशयता का सुझाव दिया था।

सुलह करवाना (CONCiliation) :- सुलह करवाने की प्रक्रिया मे जाँच और मध्यस्थता दोनों शामिल होते है। कोई व्यक्ति या आयोग विरोधी पक्षो मे सुलह करवाने का प्रयास कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र ने सुलह करवाने के अनेक प्रयास किए है। सुलह करवाने के आयोगो का प्रावधान हेग (The Hague) के 1899 और 1907 के दस्तावेजो मे किया गया है। इस प्रकार के आयोगो की स्थापना सम्बद्ध पक्षो के मध्य किए गए विशेष समझौतो के द्वारा की जाती है। यह आयोग जाँच-पड़ताल करके अपनी सिफारिशे करता है। परन्तु ये सिफारिशे बाध्यकारी नही होती है। बोगोटा समझौते, 1948 मे इस प्रकार के आयोग की व्यवस्था है।

Scanned with CamScanner

4. पंच निर्णय (Arbitration) :- पंच निर्णय में विवाद कुछ ऐसे व्यक्तियों को सौंपा जाता है जो कि पंच कहलाते हैं। इन व्यक्तियों को दोनों पक्ष स्वेच्छा से चुनते हैं। वे अपना निर्णय देने में किसी कानूनी बाधा से बंधे नहीं होते हैं। विभिन्न देशों के द्वारा हस्ताक्षर की गई अनेक संधियों में विवाद समाधान के लिए पंच निर्णय के प्रावधान पाए जाते हैं। ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य सम्पन्न 1794 की जे संधि में आपसी विवादों के समाधान के लिए पंच निर्णय की व्यवस्था की गई है।

उदाहरण :- सन 1872 के ब्रिटेन और अमेरिका के विवाद संबंधी अलाबामा विवाद में किए गए निर्णय ने पंच निर्णय के महत्व को स्थापित एवं सिद्ध किया था।

5. न्यायिक उपाय :- मोटे तौर पर संघर्ष समाधान के लिए दो न्यायिक प्रक्रियाएं होती हैं। पंच निर्णय तथा न्यायिक निर्णय। विवादों का समाधान प्राय: अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार किया जाता है। दोनों ही प्रक्रियाओं में न्यायाधिकरण के निर्णय सम्बद्ध पक्षों पर बाध्य होते हैं।

न्यायिक प्रक्रिया प्राय: अधिक प्रभावी होती है। क्योंकि सम्बद्ध पक्ष उसे स्वेच्छा से अपनाते है, और स्वयं को निर्णय से बाध्य करते है।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय राज्यों के कानूनी विवादों का। उनकी स्वैच्छिक न्यायिक विकल्प अपनाने पर सुनवाई करता है। तथा निर्णय देता है। यह अन्तर्राष्ट्रीय कानून के नियमों के अनुसार कार्य करता है। हेग में स्थित अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, राष्ट्र संघ के कार्यकाल के अन्तर्राष्ट्रीय न्याय के स्थायी न्यायालय का उत्तराधिकारी है।

निष्कर्ष (CONCLUSION)

उपर्युक्त हमने विवादों को हल करने के लिए महत्वपूर्ण कूटनीतिक और अधिनिर्णयन विधियों का वर्णन किया है। कूटनीतिक विधि की यह विशेषता है कि विवादग्रस्त तथा पारस्परिक वार्ता या मध्यस्थ की सहायता से मुद्दे पर विचार कर विवाद का समाधान करने के लिए सहमत हो जाना।

Scanned with CamScanner